International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 97-101

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 97-101
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-03-2018
Accepted: 21-04-2018

Swasti Sharma
Research Scholar,
Department of Sanskrit
University of Delhi, New Delhi,
India

Correspondence
Swasti Sharma
Research Scholar,
Department of Sanskrit
University of Delhi, New Delhi,
India

वेदान्तविषयक पाण्डुलिपियों की सम्पादन-प्रविधि

Swasti Sharma

प्रस्तावना

पाण्डुलिपि उस आलेख को कहते हैं जो एक अथवा अनेक व्यक्तियों द्वारा हस्तलिखित हो। प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों के द्वारा लिखे गये ज्ञान-विज्ञान के जो ग्रन्थ आज हस्तलिखित पाण्डुलिपियों में उपलब्ध होते हैं, वे बार-बार प्रतिलिपिकरण की प्रकिया से गुजरते हुये हम तक पहुँचे हैं। परन्तु मानवकृत प्रतिलिपिकरण के द्वारा पीढी दर पीढी संचरित होनेवाले इन ग्रन्थों का पाठ आकस्मिक कारणों से नष्ट-भ्रष्ट होता रहा है। तथा ये सभी पाठ पुनर्लेखन के दौरान भी लिपिकारों के हाथ से अनजाने में और कभी कभी जान-बूझ कर भी, अपने मूल रूप से विचलित किये गये है। अतः पाण्डुलिपियों में सुरक्षित रहे इन ग्रन्थों का पाठ सम्पादित किया जाना विचारणीय विषय है।

वेदान्त दर्शन का भारतीय दर्शनों में विशेष स्थान है। बादरायण इसके प्रणेता आचार्य हैं व आदि शंकराचार्य प्रवर्तक माने जाते हैं। इस दर्शन के कई विद्वान आचार्यों ने ग्रन्थ रचे परन्तु उनमें से आज भी अनेक ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। भाग्यवश कुछ ग्रन्थ हमें प्राप्त हो रहे हैं। अतः उनका सम्पादन पूर्वाचर्यों ने कैसे किया? उनके क्या सिद्धान्त थे? अतः वेदान्तविषयक पाण्डुलिपियों के सम्पादन की प्रविधि उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का प्रयास है। वस्तुतः सभी ग्रन्थों की पाण्डुलिपि-सम्पादन के नियम प्रायशः समान ही हैं। तथापि मूलतः वेदान्त दर्शन को ही आधार बना कर तद्विषयक शोध-पत्र प्रस्तुत है।

वेदान्तदर्शन

महर्षि बादरायण ने ब्रह्मसूत्र रच कर वेदान्त-दर्शन की स्थापना की। वेदान्तदर्शन प्रस्थानत्रयी में आता है। जिनमें प्रथम प्रस्थान है - उपनिषद् जिन्हें श्रुतिप्रस्थान भी कहा जाता है। द्वितीय है - ब्रह्मसूत्र । यह सूत्रप्रस्थान व न्यायप्रस्थान के रूप में भी विख्यात है। तृतीय प्रस्थान है - श्रीमद्भग्वद्गीता जो स्मृतिप्रस्थान के नाम से भी प्रसिद्ध है।

बादरायण द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र का अध्ययन उत्सुकतावश किया गया। क्योंकि इसके अध्ययन के बिना उपनिषद्-दर्शन का ज्ञान सरलता से सम्भव ही नही था। अर्थात् उपनिषदों के अध्ययन का प्रथम चरण वेदान्त-दर्शन को ही माना गया। ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि वेदान्त भी उसी एक परमतत्त्व को प्राप्त करने की बात करता है एवं उसके साक्षात्कार का साधन बताता है।

उपनिषदों में भी उसी एक परमतत्त्व की प्राप्ति की चर्चा है। ब्रह्मसूत्र के साहित्य की तीन परम्परायें हम मान सकते हैं। वे हैं -

1. मूल = सूत्र
2. वृत्ति
3. भाष्य

वेदान्त की कई शाखायें भी बनी। यथा-अद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत इत्यादि। शङ्कराचार्य ने वेदान्त-दर्शन क मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने इसका विस्तृत अध्ययन व गहन चिंतन किया व अनेक ग्रंथ भी रचे।
यहाँ वेदान्त के चार मूल ग्रन्थों के सम्पादन को आधार बना कर सम्पादन की प्रविधि प्रदर्शित की जा रही है।
वे चार ग्रन्थ हैं-

1. ब्रह्मसूत्र - बादरायण
2. उपदेशसाहस्री - शङ्कर
3. वेदान्तकौमुदी - आचार्य रामाद्वय
4. ब्रह्मसिद्धि - आचार्य मण्डनमिश्र

सम्पादित ग्रन्थ व सम्पादनकर्ता

ब्रह्मसूत्र- "A Critical Edition of the Brahmsutras" by Shailja Bapat
उपदेशसाहस्री- "Sankara's Padesasahasri" by Sengaku Mayeda
वेदान्तकौमुदी- "वेदान्तकौमुदी" सम्पादक - डा. राधेश्याम चतुर्वेदी
ब्रह्मसिद्धि- "Brahmasiddhi" सम्पादक-प्रो. एस. कुप्पुस्वामी शास्त्री
इन चारों ग्रन्थों के सम्पादन का विवरण आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

ब्रह्मसूत्र: ब्रह्मसूत्र के सम्पादन के लिये शैलजा जी ने 250 पाण्डुलिपियों का मिलान किया, जो अप्रकाशित थी एवं ब्रह्मसूत्र का मूलमात्र थी अर्थात् टीकावृत्त्यादि से रहित। ये पाण्डुलिपियाँ कई लिपियों में थी। यथा- ग्रन्थ, देवनागरी, तेलुगु, नन्दनागरी, मलयालम और बंगाली। ये पाण्डुलिपियाँ ताड-पत्र और कागज पर लिखित थी। और साथ ही देवनागरी लिपि में प्रकाशित 10 आचार्यों की 10 टीकाओं का भी मिलान किया। एवं टीका, वृत्ति, भाष्य आदि की पाण्डुलिपियों का भी मिलान किया। यह वास्तविक रूप में एक महान कार्य था। वर्तमान में ब्रह्मसूत्र के 192 अधिकरण, 16 पाद, 4 अध्याय प्राप्त हैं।

उपदेशसाहस्री: उपदेशसाहस्री के सम्पादन के लिये सेंगाकु महोदय ने कई सूचियों का निरीक्षण किया। जिनके अनुसार भारत में व विदेशों में उपदेशसाहस्री की 70 से ज्यादा पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं, जिनमें से कुछ पूर्ण थी व कुछ अपूर्ण। इनमें से 42 पाण्डुलिपियों का परीक्षण व मिलान किया। 27 पाण्डुलिपियाँ पद्य भाग की थी एवं 11 पाण्डुलिपियाँ गद्य भाग की। पद्य भाग की 27 पाण्डुलिपियों में से 16 देवनागरी में, 6 तेलुगु में और 5 ग्रन्थ-लिपि में लिखित थी। और गद्य भाग की 11 पाण्डुलिपियों में 8 देवनागरी में, 2 तेलुगु में और 1 ग्रन्थ-लिपि में बद्ध थी। एवं 16 प्रकाशित ग्रन्थों को भी आधार बनाया।

सेंगाकु महोदय को उपदेशसाहस्री की चार टीकायें प्राप्त हुई। और वे हैं -

1. आनन्दज्ञान - उपदेशसाहस्रीटीका
2. बोधनिधि - उपदेशसहस्रग्रन्थविवरण
3. रामतीर्थ - पादयोजनिका
4. अखण्डधामन - गूढार्थदीपिका

रामतीर्थ 17वीं शताब्दी में हुए और आनन्दज्ञान का समय 13वीं शताब्दी के मध्य। इन्होंने उपदेशसाहस्री के सम्पादन के लिये पाण्डुलिपियों का दो भागों में वर्गीकृत किया। एक तो टीकामात्र ग्रन्थ और अन्य मूल सहित टीकाग्रन्थ।

वेदान्तकौमुदी: इस ग्रन्थ का आधार बादरायण विरचित प्रथम चार सूत्र ही हैं। अद्वैतवेदान्तविरोधी अनेक दार्शनिक मतों का उपस्थापन, युक्तिपूर्ण खण्डन तथा उनका अद्वैत वेदान्त में पर्यवसान वेदान्तकौमुदी में किया गया है। इस ग्रन्थ का सर्वप्रथम सम्पादन मीमांसामार्तण्ड पं. एस. सुब्रह्मण्यशास्त्री के द्वारा तथा 1955 में मुद्रण मद्रास विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में हुआ। सुब्रह्मण्यशास्त्री को मद्रास के राजकीय पाण्डुलिपि संग्रहालय से वेदान्तकौमुदी की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई। संग्रहालय की सूची के अनुसार इसकी संख्या है – R No. 3346.

फिर भण्डारकर रिसर्च इंस्टिट्यूट पूना से कुछ पाठान्तर प्राप्त हुए। तत्पश्चात् रोयल एशियटिक सोसायटी कलकत्ता से द्वितीय व चतुर्थ अध्यायों की पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय सायाजीराव गायकवाड ग्रन्थालय के पाण्डुलिपि संग्रहालय से भी मूल ग्रन्थ की दो प्रतिलिपियाँ प्राप्त हुई।

प्राचीन लेखन परिपाटी में ग्रन्थ 'अथ' से 'इति' तक विराम-चिह्न आदि से रहित एक अनुच्छेद के रूप में लिखे जाते थे। कालान्तर में अध्यायों की समाप्ति पर उच्छेद की शैली अपनायी गयी। प्राप्त पाण्डुलिपियाँ इसी ही शैली में निबद्ध हैं। आचार्य रामाद्वय ने मूल ग्रन्थ के साथ इसकी टीका का भी प्रणयन किया।

मुद्रित पाठ को यथावत रखा गया। पाण्डुलिपि वाले पाठान्तर को ( ) छोटे कोष्ठकों में रखा गया एवं अस्पष्ट शब्दों को [ ] - इस प्रकार के कोष्ठकों में रखा गया।

ब्रह्मसिद्धि: "ब्रह्मसिद्धि" नामक ग्रन्थ के सम्पादन के लिये प्रो. एस. कुप्पुस्वामी शास्त्री ने पाण्डुलिपियों का तीन तरह से वर्गीकरण किया।

1. मूल ग्रन्थ की पाण्डुलिपियाँ
2. मूल ग्रन्थ पर शङ्खपाणि द्वारा रचित टीका की पाण्डुलिपियाँ
3. मूल ग्रन्थ पर अन्य आचार्यों द्वारा रचित टीकाओं की पाण्डुलिपियाँ

इस ग्रन्थ के सम्पादन के लिये प्रो. एस. कुप्पुस्वामी शास्त्री ने मूल ग्रन्थ की तीन पाण्डुलिपियों को आधार बनाया। ये तीनों ही ताड-पत्र पर लिखित थीं। और ये तीनों ही इन्हें भिन्न-भिन्न स्थानों से प्राप्त हुई। त्रिचूर, मालबार व मद्रास से।

शङ्खपाणि की टीका की दो पाण्डुलिपियाँ मिली जिनमें से एक कागज की थी व एक ताड-पत्र की।

चित्सुखमुनि की अभिप्रायप्रकाशिका टीका व आनन्दपूर्ण विद्यासागर की भावशुद्धि टीका। इन दोनों टीकाओं के अध्ययन से सम्पादन मे सहजता प्राप्त हुई।

पाठसम्पादन के प्रकार

पश्चिमी देशों में जो विचारधारायें विकसित हुई है उनमें से प्रशिष्ट कृतियों के पाठसम्पादन के लिये तीन मार्ग उद्भावित किये गये हैं-

(क) **प्रतिलेखन पद्धति से पाठसम्पादन:** किसी भी ग्रन्थ का 'पाठ' केवल एक ही पाण्डुलिपि में उपलब्ध होता हो अथवा किसी ग्रन्थकार का स्वहस्तलेख कहीं से उपलब्ध होता हो तो प्रतिलेखन पद्धति से पाठसम्पादन किया जाता है। यहाँ पर 'पाठ' के जो अवाच्यांश या त्रुटितांश को पुनःप्रतिष्ठित किया जाता है।

(ख) **संदोहन पद्धति से पाठसम्पादन:** पाठसम्पादन के क्षेत्र में उपलब्ध शताधिक पाण्डुलिपियों में सार्थक पाठान्तर होते हैं तब 'संदोहन पद्धति' का आश्रय लिया जाता है। इस पद्धति में बहुसङ्ख्य–पाण्डुलिपियों में संचरित हुए पाठ का चयन एवं अल्पसङ्ख्यक पाण्डुलिपियों के संचरित पाठ को अस्वीकार्य माना जाता है। इस दृष्टि से जो पाठसम्पादन किया जाता है उसमें वस्तुलक्षिता व गुणवत्ता होती है।

(ग) **वंशवृक्ष पद्धति से पाठसम्पादन:** यह पद्धति सारे संसार में बहुत प्रचलित हुई है। इस पद्धति में चतुर्विध सोपान होते हैं-

1. अनुसन्धान
2. संशोधन
3. पाठसुधार एवं संस्करण
4. उच्चतर समीक्षा

पाण्डुलिपियाँ एकत्र कर सन्तुलन-पत्रिकाओं में पाठान्तरों की तुलना करके, वंशवृक्ष निर्मित कर प्राचीनतम पाठ को अधिक श्रद्धेय मान कर, उसके आधार पर पाठसम्पादन किया जाता है। इस तरह से किये गये पाठसम्पादन को 'समीक्षित पाठसम्पादन' कहा जाता है। प्रथम तीन सोपान में जो कार्यविधि की जाती है उसे 'निम्न-स्तरीय पाठालोचन' कहते हैं। तत्पश्चात् चतुर्थ सोपान के रूप में 'उच्च-स्तरीय पाठालोचन' का कार्य करना होता है।।

सन्दोहन पद्धति वाले पाठसम्पादन की अपेक्षा वंशवृक्ष-पद्धतिवाला पाठसम्पादन अधिक विश्वसनीय है। क्योंकि इस पद्धति से जो सम्पादन तैयार होता है, उसमें वस्तुलक्षिता बनी रहती है।

समीक्षित पाठसम्पादन तैयार करने की प्रविधि

सबसे पहले विविध भण्डारों से एक ही ग्रन्थ की उपलब्ध होने वाली अधिकाधिक पाण्डुलिपियों का व उनकी प्रतिलिपियों का एकत्रीकरण कर उनका ऐतिहासिक और तुलनात्मक दृष्टि से अभ्यास किया जाता है। तदनन्तर सहायक-सामग्री (वृत्ति, टीका, भाष्यादि) का संग्रह कर प्राप्त पाण्डुलिपियों का लिपि के आधार पर, पूर्णता व अपूर्णता के

आधार पर, स्थान के आधार पर तथा अन्य आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। संतुलन-पत्रिका–निर्माण किया जाता है। संग्रहित पाण्डुलिपियों का सांकेतिक नामकरण, पाठ का चयन कर उसे आधार बना कर अन्य के साथ तुलना, विषम पाठ व अशुद्धियों का अंकन, पाठान्तरों की तुलना कर उपलब्ध पाण्डुलिपियों के पारस्परिक आनुवंशिक सम्बन्ध ढूँढे जाते हैं।

वंशवृक्ष-निर्माण हेतु ग्रन्थ की समाप्ति में पुष्पिका में लिखित लेखक का नाम, समय, स्थान आदि का पता कर आदर्श प्रति का भी ज्ञान करना होता है। कई ग्रन्थों में पुष्पिका नही भी मिलती है परन्तु प्रतिलिपि कि अनुकारिता से भी वंश-वृक्ष निर्मित किया जाता है। चयनित प्रत्येक पाण्डुलिपियों के पाठ (अशुद्धियाँ तथा पाठान्तरादि) सन्तुलन-पत्रिकाओं में अंकित कर पाठान्तरों की तुलना करके, उपलब्ध पाण्डुलिपियों के पारस्परिक आनुवंशिक सम्बन्ध ढूँढ कर पाण्डुलिपियों के वंशवृक्ष का विचार किया जाता है। तत्पश्चात् पाठ्यग्रन्थ की प्रवर्तमान पाठपरम्परायें निश्चित कर प्राचीनतर या प्राचीनतम पाठ्यांश तय किया जाता है।

संकेतीकरण- पाण्डुलिपि सम्पादन के लिये सभी पाण्डुलिपियों को मिलाया गया और जहाँ भिन्नताएँ पायी गयी वहाँ कुछ संकेत दिये गये। इन संकेतों का विवरण यहाँ प्रदर्शित किया जा रहा है। ये पूर्वाचार्यों द्वारा निर्मित है एवं आगे भी इसी ही प्रक्रिया को अधार बना कर सम्पादन किया गया।

- Ms- पाण्डुलिपि का विवरण।
- Title- जहाँ से पाण्डुलिपि प्राप्त हुई उस संस्था का व पुस्तकालय और स्थान का नाम शीर्षक के रूप में।
- CW- (Change of Word) यह संकेत पाण्डुलिपि में प्राप्त सूत्र में शब्द-परिवर्तन को दर्शाता है।
- A- (Addition) अर्थात् योग। यह संकेत पाण्डुलिपि में प्राप्त सूत्रों के योग तथा सूत्रों में शब्दों के योग को दर्शाता है।
- O - (Omission) यह संकेत पाण्डुलिपि में प्राप्त सूत्रों का तथा सूत्रों में शब्दों का छूट जाना या उनकी लुप्ति दर्शाता है। यह गलती से होता है।
- E/D- (Erase/Delete) यह संकेत पाण्डुलिपि में प्राप्त सूत्रों का तथा सूत्रों में शब्दों का गायब होना दर्शाता है। यह जान बूझ के किया गया होता है।

आलोचना: पूर्व निर्देशित ये सब कार्य करने के बाद ग्रन्थ के पाठ की अलोचना की जाती है। यह दो प्रकार की है।

1. **पाठालोचना:** शास्त्रकार ने **"**क्या यही लिखा था**" ?** ऐसा प्रश्न उठा कर लिखितांश की आलोचना।
2. **दर्शनालोचना:** तथ्य, सिद्धान्त, तत्त्वमीमांसादि विषयक आलोचना।

इन दोनों विधाओं से प्राप्त ग्रन्थ की आलोचना की जाती है। क्योंकि पाठालोचन के बाद ही सम्पादन सम्भव है।

वेदान्तदर्शन के सम्पादित ग्रन्थों में प्राप्त पाठभेद

उपर्युक्त प्रविधि को आधार बना कर ही इन विद्वानों ने ग्रन्थों को सम्पादित किया। इस शोध-पत्र के लिये जिन ग्रन्थों को आधार बनाया गया**,** उनके पाठ सम्पादन के समय स्वीकृत पाठ एवं प्राप्त पाठान्तरों का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

उपदेशसाहस्री

- उपदेशसाहस्री में पद्यबन्ध के प्रथम प्रकरण चैतन्यप्रकरण के तृतीय श्लोक में एवं नित्यपरावृत्तो$यम् में नित्य के स्थान पर नित्यं प्राप्त हुआ G9 में। G9 मतलब Government Oriental Manuscripts Library, Madras. No. R. 4149(b). यह ग्रन्थ लिपि में है और अपूर्ण है।
- इसी के ही सप्तम श्लोक में स्वीकृत पाठ है**-** "विद्यैवात्र विधीयते"। व अन्य में प्राप्त है**-** "विद्यैवात्राभिधीयते" B1 में। B1 अर्थात् Bhandarkar Oriental Research Institute.

ब्रह्मसिद्धि

ब्रह्मसिद्धि के ब्रह्मकाण्ड के प्रारम्भिक अंशों का पाठ व पाठान्तर यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्वीकृत पाठ	**पाठान्तर**
• संबन्धाग्रहणात्	संबन्धाग्रहात्
• विप्रतिपत्तिनिराकरणमुखेन	विप्रतिपत्तिनिराकरणेन
• आनन्दात्मकत्वे	आनन्दात्मत्वे
• शीतह्रदे	शीतनिमग्ना

वेदान्तकौमुदी

- मूलग्रन्थ के प्रथम श्लोक में तृतीय पङ्क्ति है**-** "सौवर्णे योगपीठे लिपिमयकमले सूपविष्टस्त्रिणेत्रः"। सम्पादित पाठ में "स्त्रिणेत्रः" स्वीकृत किया गया है जबकि अन्य दो पाण्डुलिपियों में से एक में "त्रिनेत्रः" प्राप्त हुआ व अन्य में "त्रिणेत्रः"।

- पञ्चम श्लोक में स्वीकृत पाठ है- "व्रणानां फणानां"। पाठान्तर में प्राप्त हुआ-"प्रणनां हणानां" एवं "व्रणानां फणानां"।
- सप्तम श्लोक के सम्पादित पाठ में स्वीकृत पाठ है- "गाढायोधनतः स्वबुद्धिकरणायालं प्रभुर्भासते"। प्राप्त पाठान्तर है – (क) "कारणायेव", (ख) "कारणायो व", (ग) "करणायालं" आदि।

उपसंहार

भारत का प्राचीन साहित्य विपुल होने के साथ साथ बहुविध भी है। इन्हीं में भारतीय ज्ञान आवृत है। जो हमारी विरासत भी है। इसलिये पाण्डुलिपियों की सुरक्षा कर उनका सम्पादन करना हमारा कर्तव्य है। इन पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान-सम्पदा को अनावृत कर उसे समस्त जगत के सामने लाना ही हमारा ध्येय है। उसके लिये इनमें जो पाठ शताब्दियों से संचरित हो कर हम तक पहुँचा है उसका सम्यक् रूप से सम्पादन करना जरूरी है।

सम्पादन का लक्ष्य मूल ग्रन्थ के समीप पहुँच कर मौलिक पाठ प्राप्त करना। पाण्डुलिपियों में संचरित हुए अशुद्ध पाठ में से प्राचीनतर पाठ की गवेषणा कर के उसे शुद्ध कर पुनः प्रतिष्ठित करना एवं पाठसम्पादन के साथ साथ पाठ का पुनर्गठन करना है। वेदान्तविषयक पाण्डुलिपियों के सम्पादन करने से पूर्व हमें वेदान्त के सिद्धान्तों को सम्यक् रूप से आत्मसात् किया जाना आवश्यक है। तदनन्तर ही सम्पादन संभव है। क्योंकि ग्रन्थ स्वयं के सिद्धन्तों के विपरीत कभी नही जा सकता। जहाँ पाठान्तरवश सन्देह पाया जाता है वहाँ उचित शब्द-निर्णय लेने में कठिनाई नहीं होगी और ग्रन्थकार को अभिप्रेत शब्द के निकट हम पहुँच सकते हैं।

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. Mayeda Sengaku, Shankara's Upadesasahasri. Motilal Banarasidass Publications. Delhi, 2006.
2. Bapat Shailja. A Critical Edition of the Brahmsutras. New Bhartiya Book Corporation, Delhi, 2011.
3. Acarya Mandanmisra. Brahmsiddhi. Comnt. Shankhapani. Edi. Sastri, S. Kuppuswami. Madras Government Press, Madras, 1937.
4. आचार्य रामाद्वय. वेदान्तकौमुदी. संपा. चतुर्वेदी, राधेश्याम. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोधप्रकाशन, काशी,1973
5. अञ्जना. शंकर का अद्वैत दर्शन. परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2006.
6. आंगिरस, रमाकान्त. शांकर वेदान्त : एक अनुशीलन. नटराज पब्लिशिंग हाउस, करनाल, 1982.
7. तारादत्त. शंकराद्वैत के प्रमुख सिद्धान्तों का पारम्परिक विश्लेषण. नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2002.
8. महापात्र, प्रभातरञ्जन. अद्वैतवेदान्ते परमतत्त्वम्. उत्कलसंस्कृतगवेषणासमाज, पुरी, 2003.
9. शर्मा, ऊर्मिला. अद्वैत वेदान्त में तत्त्व और ज्ञान. छन्दस्वती प्रतिष्ठान, वाराणसी, 1978.
10. शर्मा,राममूर्ति. अद्वैत वेदान्त (इतिहास और सिद्धान्त). इस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली,1998.
11. सिंह, कालिप्रसाद. शांकरवेदान्ते तत्त्वमीमांसा. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1982.
12. उपाध्याय, बलदेव. भारतीय दर्शन. चौखम्बा ओरिएंटल प्रकाशन, वाराणसी, 1979.